ओ३म्

कृण्वन्तोविश्वमार्यम्

आर्य्य मार्तण्ड

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान का मुखपत्र – पाक्षिक

वैदिक संस्कृति संरक्षण एवं सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रतिबद्ध–आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, राजा पार्क, जयपुर

वर्ष : 92 अंक : 16
ज्येष्ठ शुक्ल षष्ठी
विक्रम संवत् 2075
कलि संवत् 5119
21 मई 2018 से 5 जून 2018
दयानन्दाब्द : 194
सृष्टि संवत् : 01,96,08,53,119
मुख्य सम्पादक :
डॉ. सुधीर शर्मा – 9314032161
संपादक मंडल :
स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, सीकर
श्री ओम मुनि, ब्यावर
श्री विजयसिंह भाटी , जोधपुर
डॉ. बलवंत शास्त्री, बहरोड़, अलवर
डॉ. स्नेहलता शर्मा, राज. सस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर
श्री हरिपाल शास्त्री , अलवर
श्री जगदीश आर्य, जखराणा, अलवर
श्री ओमप्रकाश विद्यावाचस्पति, जयपुर
डॉ. संदीपन आर्य, जयपुर
श्री बृजेन्द्र देव आर्य्य , अलवर
श्री अनिल आर्य, जयपुर
प्रकाशक : आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
दूरभाष : 0141 – 2621879
प्रकाशन : दिनांक 5 एवं 21
पत्र व्यवहार का अस्थाई पता :
डॉ. सुधीर शर्मा सम्पादक, आर्य्य मार्तण्ड, 42, मुक्तानन्द नगर, गोपालपुरा बाईपास , जयपुर – 302018। मो. – 9314032161
मुद्रक : राज प्रिन्टर्स एण्ड एसोशिएट्स, जयपुर
ग्राफिक्स : प्रिण्टपैक, जयपुर ।
ई–मेल : aryamartand@gmail.com
arya.sabha1896@gmail.com
एक प्रति मूल्य : 5 रुपया
सहायता शुल्क : 100 रुपया
ऑनलाईन प्राप्ति :
www.thearyasamaj.org/aryamart

हे मानव! नारी के सम्मान में जरा आँखे खोलो

वर्तमान समय में ऐसे भयंकर–भयंकर पाप हो रहे हैं कि सुनकर रौंगटे खड़े हो जाएं, आंखें डब–डबा जायें,हृदय द्रवित हो जाये। अरे राम! कितना घोर अन्याय, घोर पाप आज समाज में अधिकांश लोग कर रहे हैं। लेकिन समाज के लोगों का ध्यान उधर नहीं जाता है कि हमारे वेद, शास्त्र, गीता, रामायण, महाभारत आदि ग्रंथों में इस मानव शरीर को प्राप्त करना सबसे दुर्लभ बताया गया है। रामचरित मानस के उत्तर कांड में एक संवाद आता है, जिसका नाम काक भुशुण्ड और गरूड़ संवाद है। वहां दो विद्वान बैठकर आपस में बात कर रहे हैं– पहला व्यक्ति प्रश्न करता है कि बताओ संसार में ऐसा कौन सा चोला है, शरीर है, योनि है जो परमात्मा की भक्ति करने के बाद बड़ी मुश्किल से प्राप्त होती है? तो तुलसीदास जी ने अपनी रामचरित मानस के उत्तर कांड में ही एक चौपाई में इस प्रश्न को उठाया है–

प्रथम कहूं नाथ मम धीरा। सबसे उत्तम कवन शरीरा।।

अर्थात् वह विद्वान पूछता है कि संसार में ऐसा कौन सा चोला है जो बड़ी मुश्किल से प्राप्त होता है तो उत्तरकांड में ही तुलसीदास जी ने इसका उत्तर देते हुए लिखा है–

नर तन सम नहिं कोहि देही। जीव चराचर जांचत जेही।।

गोस्वामी तुलसीदास जी इस शरीर की प्रशंसा करते नहीं थकते और आगे लिखते हैं कि–

छिति जल पावन गगन समीरा। पंच रचित अति अगम शरीरा।।
बड़े भाग्य मानस तन पावा। सुर दुर्लभ सद् ग्रन्थन्हिगावा।।

और आगे इसी प्रसंग में काक भुशुण्डिजी मनुष्य शरीर की प्रशंसा करते हुए कहते हैं–

तजऊ न तन निज इच्छा मरना। तन विनु वेद भजन नहिं वरना।।

भगवान श्रीकृष्ण ने गीता के अंदर शरीर की प्रशंसा करते हुए लिखा कि–

दुर्लभो मानुषो देहो देहिनां क्षणभंगुरः

और महाभारतकार महर्षि व्यास जी ने शरीर रचना को श्रेष्ठ बताते हुए लिखा है–

नहि मानुषात् श्रेष्ठतम् कश्चित्

अर्थात् मनुष्य से श्रेष्ठ कोई योनि नहीं है। वेद में मानव शरीर को परमात्मा से मिलने का साधन माना है–

इयं ते यज्ञाः तनूसे (यजु0)

इसी की पुष्टि तुलसीदास जी एक जगह और करते हैं–

साधन धाम मोक्षकर द्वारा। पाहि न जेहि परलोक सिधारा।।

शरीर धर्म है, सद्गुण है, सदाचार है। ऐसे मनुष्य शरीर के आरंभ को ही खत्म कर देना, काट देना, कितना घोर अपराध है, कितना अन्याय है, कितना पाप है। मेरे मन में बडा दुःख हो रहा है, जलन हो रही है पर क्या करूं? जिस मनुष्य शरीर से परमात्मा की प्राप्ति हो जाये, उस मनुष्य शरीर को पैदा ही नहीं होने देना, नष्ट कर देना पाप की आखिरी हद है। किसी जीव को मनुष्य शरीर प्राप्त न हो जाये, किसी का कल्याण न हो जाये, उद्धार न हो जाये, इसलिए भ्रूण हत्या करके नष्ट कर देना है। हमें पाप पाप भले ही लगे, हम नरक में भले ही जाये पर किसी जीव को कल्याण का मौका नहीं देना है।

योहि मित्रेषु कालज्ञः सततं साधु वर्तते । तस्य राज्यं च कीर्तिश्च प्रतापश्चाभिवर्धते।। –वाल्मीकि रामायण – किष्किन्धाकाण्ड, सर्गः 23 ।।
अर्थात् समय को जानने वाला जो पुरुष अपने मित्रों के साथ उत्तम व्यवहार करता है उसका राज्य, यश और प्रताप उत्तरोत्तर बढ़ता है।

जब पाण्डव वन में रहते थे उस समय द्रौपदी ने युधिष्ठर से प्रश्न किया कि महाराज आप धर्म को छोड़कर एक पांव भी आगे नहीं रखते, किसी का भी अनिष्ट नहीं करते, पर जंगल में भटकते हो, अन्न, जल आदि पास में नहीं है। फल, फूल आदि खाकर जीवन निर्वाह करते हो, परंतु जो अन्याय ही अन्याय करता है वह दुर्योधन खूब मौज कर रहा है, राज्य कर रहा है तो धर्म कर्म कुछ है कि नहीं? ईश्वर कोई न्याय करता है कि नहीं? युधिष्ठर ने कहा कि देवी तेरे भीतर यह बात कैसे पैदा हो गई, जो अपनी सुख सुविधा के लिए धर्म का पालन करता है वह धर्म के तत्व को नहीं जानता। धर्म का तत्व तो वह जानता है जो कष्ट पाने पर भी धर्म का त्याग नहीं करता। धर्म का महत्व है, सुख सुविधा का नहीं। सुख सुविधा का महत्व तो पशुओं को भी है। मैं सुख सुविधा पाने के लिए धर्म का पालन नहीं करता।

विचार करें जब धर्म का पालन अपनी सुख सुविधा के लिए नहीं किया जाता तो फिर उस सुख सुविधा के लिए भ्रूण हत्या जैसे भंयकर पाप कर रहे हैं, उनकी दशा क्या होगी? भ्रूण हत्या में भी विशेषकर गर्भ में स्थित कन्या को मार देते हैं, काट देते हैं, इससे भयंकर और पाप क्या होगा। संसार के लोकाचार में कन्या से अधिक लड़के को अधिक महत्व दिया जाता है लेकिन हमारे धर्मग्रन्थों में मातृशक्ति का दर्जा पिता से हजार गुना अधिक बताया है।

सहस्रतु पितृन्माता गौरवेणातिरिच्यते (मनु0)

साधारण बोलचाल में भी पहले मां का नाम लिया जाता है– सीताराम, लक्ष्मीनारायण, गौरीशंकर आदि। प्रत्येक पुरूष वर्ग को विचार करना चाहिए कि हम सब मां की कोख से आये हैं, बाप की कोख से नहीं। सबने मां का दूध पिया है, बाप का नहीं। मां के स्नेह, प्यार से बच्चे का जो पालन होता है, वह पिता के स्नेह से नहीं। मां की बड़ी विलक्षण महिमा है। आप अपने सुख सुविधा के लिए लोभ में आकर मातृशक्ति का नाश करते हो, कन्या को पेट में ही मार देते हो यह बडा भारी पाप है। मातृशक्ति का इतना बड़ा अपमान हो नहीं सकता। गर्भ में जो बच्ची है, वह मातृशक्ति है, उस मातृशक्ति का गर्भ में ही निवारण कर दोगे, उसे जन्म ही नहीं लेने दोगे तो कहां जन्मोगे? किसका दूध पिओगे? गोदी कहां से लाओगे? किस जगह प्यार पाओगे? कौन ह्दय से लगायेगा? आजकल स्त्री–पुरूष के समान अधिकार की बात कही जाती है परंतु वास्तव में स्त्रियों का सामान अधिकार नहीं हो सकता प्रत्युत उनका तो दर्जा बहुत ऊंचा है। क्योंकि यह मां है, ईश्वर के बाद दूसरा अगर किसी का स्थान है तो वह मां है। साधुओं के बहुत मकान होते हैं पर वह घर नहीं कहलाते। घर तो स्त्री के कारण ही कहलाता है। इसलिए महर्षि व्यास जी महाभारत में लिखते हैं–

न गृहं गृहमित्याहुर्गुणी गृहमुच्यते

अर्थात् ईंट, पत्थर आदि से बने घर का नाम घर नहीं है। अपितु गृहणी ही घर कहलाती है। जरा आंख खोलो– नारी के सम्मान के लिए महाभारत का युद्ध हुआ, नारी जाति की रक्षा के लिए ही श्रीराम ने रावण से युद्ध किया, नारी जाति के सम्मान के लिए ही भीष्म जी ने अपने प्राण त्याग दिये पर शिखण्डी पर बाण नहीं चलाया। परंतु आज नारी को, मातृशक्ति को नष्ट करके उसको केवल भोग्य वस्तु बनाया जा रहा है। ऐसा घोर पाप मत करो। पाराशर स्मृति में लिखा है–

श्रूयतां धर्म सर्वस्वं श्रुत्वा चैवावधार्यताम्।
आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्।।

अर्थात् धर्म के सर्वस्व को सुनो और सुनकर उसे धारण करो। जो आचरण अपने से प्रतिकूल हो उसको दूसरों के प्रति मत करो। कोई आपकी उन्नति रोक दे, पढ़ना रोक दे, आपका जन्म रोक दे, आपका बढ़ना रोक दे, आपका भजन ध्यान रोक दे, आपके इष्ट की प्राप्ति रोक दे तो उसका पाप लगेगा या पुण्य लगेगा ? जरा विचार कीजिए कोई जीव मनुष्य जन्म में आ रहा है, उसमें रूकावट डाल देना, उसको जन्म ही नहीं लेने देना कितने बढ़ें पाप की बात है। हां आप ब्रम्हचर्य का पालन करो तो आपका शरीर भी ठीक रहेगा और पाप भी नहीं लगेगा। परंतु भोग तो भोगेंगे, शरीर का नाश तो करेंगे पर संतान पैदा नहीं होने देंगे। यह बड़े भयंकर पतन की बात है। छोटे–छोटे जीवों को आप मार देते हो, वे बेचारे कुछ नहीं कर सकते, परंतु क्या भगवान के यहां न्याय नहीं है? निर्बल को नष्ट कर देना कितना बड़ा पाप है, महाभारत की कथा आप सुनो और पढ़ो। युद्ध में दूसरे को चेताते हैं कि सावधान हो जाओ मैं बाण चलाता हूं। शत्रु पर बाण भी चलाते हैं तो पहले उसे सावधान करते हैं, फिर बाण चलाते हैं। जो बेचारे कुछ नहीं कर सकते, अपना बचाव भी नहीं कर सकते और आपका अनिष्ट भी नहीं कर सकते ऐसे क्षुद्र जंतुओं को नष्ट कर देना बड़ा भारी अन्याय अत्याचार है।

विचारशील पुरूषों ! विचार करो कि आप अपना बुरा नहीं चाहते हो तो दूसरों का बुरा करने का आपको क्या अधिकार है? अतः किसी के भी सुख में बाधा मत डालो, किसी के भी जन्म में बाधा मत डालो, किसी का भी भला करने में बाधा मत डालो। जो बात आप अपने लिए नहीं चाहते उसको औरों के लिए भी मत करो। यह सबसे पहला धर्म है। जो जीव असमर्थ है कुछ नहीं कर सकता उसके साथ अत्याचार करना भगवान को मंजूर नहीं है। जो दूसरों का नाश करने के लिए समर्थ होते हैं उनको गीता के अनुसार भगवान श्रीकृष्ण असुर बताते हैं। कहते हैं –

प्रभवन्त्यग्रकर्माणः क्षयाय जगतोहिताः

जानबूझकर मूक, असमर्थ जीवों की हत्या करते हो और चाहते हो कि हमारा भला हो जाये, कैसे हो जायेगा? कल्याण कैसे हो जायेगा? श्रीराम ने शत्रु का भी अनहित नहीं किया–

अरिहुक अनमल कीन्हन रामा

अगंद को रावण के पास भेजा तो उससे भी कहा–

काजु हमार तासु हित कोई

जो सीता को ले गया और मरने मारने को तैयार है, उसके पास भी दूत को इसलिए भेजते हैं कि काम तो हमारा बन जाये, हमें हमारी सीता मिल जाये परंतु रावण का हित हो जाये। यह बात किस संस्कृति में है, उस संस्कृति में जन्म लेना बंद कर देना कितना भारी अन्याय है। शास्त्र जिसको महापाप कहता है और

कः कालः कानि मित्राणि कः देशः को व्ययागमोः । कस्याहं का च मे शक्तिरिति चिन्त्यं मुहुर्मुहुः ।। – अर्थात् कैसा समय है, कौन सा देश है, कौन मेरे मित्र हैं? मेरी आय–व्यय क्या है? मैं किसकी ओर हूँ और मेरी क्या शक्ति है! इसे बार–बार सोचना चाहिए।

जिसको आप जानते हो उसे बड़े जोरों से कह रहे हो और फिर चाहते हो कि हमारी सद्गति हो जाये, तो सोचो कैसे हो सकती है? मेरे देश में दुर्गा, सीता, संतोषी आदि देवियों की पूजा तो नित्य प्रति मां बहिन करती हैं तथा करोड़ों लोग करते हैं परंतु यही यही मां बहिन अपने पेट के अंदर पलने वाली दुर्गा सीता की निर्मम तरीकों से हत्या कर देती हैं। विचार करो मां का स्थान बहुत ऊंचा है। किसी कवि ने बहुत ही सुंदर लिखा है–

ऊपर जिसका अंत नहीं, उसे आसमां कहते हैं।
जहां में जिसका अंत नहीं उसे मां कहते हैं।।

बार–बार विचार करो, सोचो और अपने विचारों को दृढ़ करो कि हम कभी अपने पेट में पलने वाली कन्या को भ्रूण हत्या के रूप में कत्ल नहीं करने, मां बनने वाली दुर्गा, सीता, संतोषी को कूढ़ेदान में नहीं फेंकेगे और अपने जीवन को ब्रम्हहत्या के पाप से मुक्त करेंगे। किसी कवि ने बड़ा सुंदर लिखा है–

पहले तो मां ने तुझको नौ महीने पेट में ढ़ोया।
सीने का दूध पिलाया तू जब–जब बन्दे रोया।।
बड़ा कर्ज है तुझ पर मां का, तेरा काम है कर्ज चुकाना।
जिसने तुझे जन्म दिया रे, दिल उसका नहीं दुःखाना।।

लेखक :–
विवेक प्रिय आर्य
मंत्री : आर्य वीर दल, मथुरा

विकासवाद का वैदिक सिद्धान्त

गतांक से आगे...

मेरा आधिभौतिक भाष्य–(पृथिवि) वह गर्भरूप पूर्वोक्त पृथिवी (उच्छ्वञ्चस्व) उत्कृष्टरूपेण ऊर्ध्व दिशा में स्पन्दित होती हुई किंवा उफनती हुई होती है। (मा बाधथाः) उस भूमि का आवरण ऐसा होता है, जो उसके अन्दर पल रहे भ्रूण वा जीव को प्राप्त हो रहे जीवनीय रसों को नहीं रोकता है अर्थात् वे रस रिस–2 कर उस जीव को प्राप्त होते रहते हैं (अस्मै) वह इस जीवन के लिए (सूपायना–भव) वह भूमि उसे पोषक व संवर्धक जीवनीय तत्वों का उपहार भेंट करती है (सूपवञ्चना) {उपवञ्चनम् = दुबकना– आप्टे} वह भूमि आवरण उन भ्रूणों वा जीवों को अच्छी प्रकार छिपाकर आश्रय प्रदान करता है (माता यथा) जिस प्रकार माता अपनी सन्तान को गोद वा गर्भ में ढक कर सुरक्षा प्रदान करती है, उसी प्रकार (नि–सिचा भूमेः) {नि+सिच् = ऊपर डाल देना, गर्भयुक्त करना– आप्टे} भूमि के वे भाग उन जीवों को अपने गर्भ में लेकर उनके ऊपर नाना आवरणों के द्वारा (एनं) उन जीवों को (अभि ऊर्णुहि) सब ओर से आच्छादित कर लेते हैं।

उच्छ्वञ्चमाना पृथिवी सु तिष्ठतु सहस्रं मित उप हि श्रयन्ताम्।
ते गृहासो घृतश्चुतो भवन्तु विश्वाहास्मै शरणाः सन्त्वत्र।।
10.18.12

मेरा आधिभौतिक भाष्य– (उच्छ्वञ्चमाना) पूर्वोक्त उफनी एवं मृदु स्पन्दन करती हुई सी कोमल (पृथिवी) भूमि (सु तिष्ठतु) उन भ्रूणों वा जीवों की आच्छादिका होकर सुदृढ़ता से सुरक्षापूर्वक स्थित होकर उन जीवों को भी स्थैर्य प्रदान करती है (सहस्रम् मितः) उस भूमि के पृथक्–2 स्थानों में अनेक संख्या में (उप हि श्रयन्ताम्) जीव निकटता से आश्रय पाते हैं किंवा उन गर्भरूप स्थानों में बड़ी संख्या में {मितः = मिनोतिगतिकर्मा– निघं. 2.14} विभिन्न सूक्ष्म अणुओं का प्रवाह बना रहता है (ते गृहासः) भूमि के वे स्थान उन जीवों के लिए घर के समान होते हैं {गृहाम् = गृहाः कस्माद् गृह्णातीति सताम्– निरु. 3.13} और घर के समान वे भूकोष्ठ उन जीवों को ऐसे ही पकड़े वा धारण किए रहते हैं, जैसे माता अपनी सन्तान को गर्भ में धारण किए रहती है (घृतश्चुतो भवन्तु) वे भूकोष्ठ ऐसे होते हैं कि उनमें घी के समान चिकने रस सदैव रिसते रहते हैं (अस्मै) वे उन जीवों के लिए (विश्वाहा) {विश्वाहा = सर्वाणि दिनानि– म.द.य.भा. 7.10} सर्वदा अर्थात् पूर्ण युवावस्था तक (शरणाः सन्तु अत्र) इस अवस्था में वे जीव उन कोष्ठों में आश्रय पाते हैं।

इन मंत्रों में भूमि के अन्दर युवावस्था तक कैसे मनुष्य सहित सभी जरायुज प्राणी विकसित होते हैं, इसका सुन्दर चित्रण किया गया है।

जिस प्रकार अमीबा आदि एक कोशीय प्राणी की कोशिका का निर्माण रासायनिक व जैविक क्रियाओं से होता है, उसी प्रकार बहुकोशीय जरायुजों तथा अण्डजों के भी शुक्र तथा रज का निर्माण इस उफनी हुई कोमल तथा सभी आवश्यक पदार्थ, जो भी माता के गर्भ में होते हैं, से परिपूर्ण पृथिवी के धरातल की परतों में हो जाता है। अब हम विचारें कि भ्रूण के पोषण के लिए माता के गर्भ की आवश्यकता क्यों होती है? इस कारण, ताकि भ्रूण को आवश्यक वृद्धि हेतु पोषक पदार्थ प्राप्त हो सकें, भ्रूण को सुरक्षित कोमल, चिकना आवरण तथा आवश्यक ताप मिल सके। यदि इन परिस्थितियों को माता के गर्भ से अन्यत्र कहीं उत्पन्न कर दिया जाये, तो भ्रूण का विकास वहीं हो जायेगा, जिस प्रकार आज परखनली से बच्चे पैदा किये गये हैं।

हाँ, एक बात महत्व की है कि उस समय मनुष्य वा कोई भी जरायुज युवावस्था में भूमि से उद्भिजों की भांति उत्पन्न होता है। भगवद् दयानन्द जी महाराज का यह कथन सर्वथा उचित है कि यदि शिशु उत्पन्न हो, तो पालन कौन करे और यदि वृद्ध पैदा होते, तब उनसे वंश कैसे चलता? (देखें– सत्यार्थ प्रकाश, अष्टम समुल्लास) उपनिषत्कार ऋषि इसे और विस्तार देता है–

तस्माच्च देवा बहुधा संप्रसूताः साध्या मनुष्याः.....।।
मुण्डक उप.2.1.7

अर्थात् उस परमात्मा से अनेक विद्वान् सिद्धि प्राप्त जन तथा साधारण विद्वान् जन पैदा हुए।

आर्य विद्वान् आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री ने ''वैदिक युग और आदिमानव'' में बोस्टन नगर (अमेरिका) के स्मिथ सीनियन इंस्टीट्यूट के जीव विज्ञान के विभागाध्यक्ष डाक्टर क्लार्क को उद्धृत करते हैं–

Man appeared able to think walk and defend himself. अर्थात् मनुष्य सृष्टि के आदि काल में सोचने, चलने तथा स्वयं की रक्षा करने में समर्थ उत्पन्न होता है।

(लेखक – आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक)

आर्य वीर दल राजस्थान के युवा चरित्र एवं व्यक्तित्व निर्माण शिविर

उदयपुर संभागीय शिविर

15 –21 जून 2018
स्थान – सरदार वल्लभ भाई पटेल, स्टेडियम, फतेहनगर
सम्पर्क :
जीवनलाल जिला संचालक –9460080886
एम.पी. सिंह (संभाग संचालक) मों 7014133853

जोधपुर संभागीय शिविर

आर्य वीरागंना शिविर
03 –10 जून 2018
स्थान –महर्षि दयानन्द स्मृति भवन
सम्पर्कः सेवा राम आर्य मों 8946981888
किशन जी गहलोत मों 9829027481

बीकानेर संभागीय शिविर

15 –21 जून 2018
स्थान –श्री डूंगरगढ़
सम्पर्क श्री सुभाष शास्त्री (संभाग संचालक)
मों 9414416410
श्री अमित आर्य (जिला संचालक)
मों 9929946469

कोटा संभागीय शिविर

03 –10 जून 2018
स्थान – कोटा शहर
सम्पर्कः रमेश गोस्वामी
(जिला संचालक कोटा) 9461182706
वृद्धिचन्द शास्त्री मों 941300264
सुनिल दुबे मन्त्री आर्य समाज विज्ञान नगर 8740056581

सार्वदेशिक आर्यवीरागंना दल के तत्वावधान में राष्ट्रीय व्यक्तित्व विकास एवं आत्मरक्षण शिविर

दिनांक 7 मई से 3 जून 2018,
आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, मुटठीगंज
इलाहाबाद (उ.प्र.)
विस्तृत जानकारी के लिए
श्री पंकज जायसवाल शिविराध्यक्ष
9415365576 सम्पके करें–
साध्वी डॉ. उत्तमायति, प्रधान

कार्यालय आदेश

प्रधान / मंत्री जी

समस्त आर्य समाज अन्तर्गत आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान , को सूचित किया जाता है कि जिन आर्य समाजों ने अभी तक वार्षिक मानचित्र सभा कार्यालय को प्रेषित नही किया है वे वित्त वर्ष 1 अप्रेल 2017 से 31 मार्च 2018 का दशाशं , निश्चित कोटि, एवं आर्य मार्तण्ड , शुल्क निर्धारित प्रपत्र (वार्षिक मानचित्र) में भरकर 30.5.2018 तक अवश्य ही सभा कार्यालय को भेज देवें वार्षिक मानचित्र सम्बन्धित आर्य समाज को डाक द्वारा प्रेषित किया जा चुका है। साथ ही यह भी संसूचनीय है कि जिन संस्थाओं द्वारा राशि सीधे बैंक में चैक , डी.डी या स्थानान्तरित कर जमा करवाई जाती है वे जमा पर्ची भेज कार्यालय से रसीद अवश्य प्राप्त कर लें । जिनको विगत वर्ष की बैंक में जमा राशि की रसीद कारण वश प्राप्त नहीं हुई वे भी सूचना देकर या कार्यालय फोन 0141–2621879 पर सूचना अवश्य देवें ताकि रसीद प्रेषित की जा सकें

मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान

सर्वद्वारेषु देहेऽस्मिन्प्रकाश उपजायते। ज्ञानं यदा तदा विद्याद्विवृद्धं सत्त्वमित्युत ।। गीता – 14/11।।
सत्त्वगुण की अभिव्यक्ति को तभी अनुभव किया जा सकता है, जब शरीर के सारे द्वार ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित होते हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती सर्किल के नामकरण हेतु यूआईटी चैयरमेन को दिया ज्ञापन

आर्य समाज जिला सभा के प्रतिनिधिमंडल द्वारा नगर विकास न्यास के चैयरमेन रामकुमार मेहता से उनके कार्यालय में मिलकर जिसमें जिलामंत्री कैलाश बाहेती, डीएवी स्कूल की प्राचार्या सरिता रंजन गौतम, आर्य समाज महावीर नगर के प्रधान आर. सी. आर्य, मंत्री राधाबल्लभ राठौर, खेड़ारसूलपुर के प्रधान रामनारायण कुशवाहा, मंत्री बंशीलाल रेनवाल आर्य विद्वान शोभाराम आर्य, आर्य समाज तलवंडी के लालचंद आर्य, योगराज कुमार, वेदमित्र वैदिक, किशन आर्य शिक्षाविद् विनोद कुशवाहा आदि शामिल थे। इस अवसर पर जिला आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा यू आई टी चैयरमेन को सौंपे ज्ञापन में कहा कि कोटा शहर के किसी भी एक चौराहे का नामकरण महर्षि दयानन्द सरस्वती सर्किल के नाम से किया जाए। इस पर आर्य समाज के प्रतिनिधिमंडल को यूटीआई चैयरमेन ने विश्वास दिलाया कि आप लोगों ने जो मांग रखी है उसे में व्यक्तिगत रुप से रुचि लेकर प्राथमिकता से महर्षि दयानन्द सरस्वती राष्ट्रीय महापुरूष हैं उनके नाम से चौराहे का नामकरण होना हमारे लिए बड़े ही गौरव की बात होगी।

आर्य समाज विजय नगर के तत्वावधान में आयोजित हुआ वेद प्रचार अभियान व निशुल्क योग शिविर

आर्य समाज विजय नगर के तत्वावधान में दस दिवसीय वेद प्रचार व योग शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें भवदेव शास्त्री ने शहर की चारो कॉलोनियों में बजरंग कालोनी, राजदरबार कॉलोनी, कुमावत कॉलोनी व रेल्वे कॉलोनी में रात्रि 8:30 से 10:00 बजे तक स्वास्थ्य, ईश्वर, वेद की शिक्षा, गृहस्थ जीवन, आर्य समाज की मान्यता, कर्मफल व्यवस्था, सुखी जीवन के उपाय, योग से स्वास्थ्य आदि विषयों पर प्रवचन दिये जिसमें सौ से अधिक साधकों ने भाग लिया प्राणायाम, आसन, सूक्ष्म व्यायाम, ध्यान, आर्योवेद, एक्यूप्रेसर, पंचगव्य आदि की जानकारी दी गईं।

प्रधान – कृष्ण गोपाल शर्मा

आर्य समाज जोधपुर रातानाड़ा

आर्य वीर दल राजस्थान के सम्भागीय आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर सम्पन्न

1. जयपुर

दिनांक 14 से 20 मई 2018 तक आर्य वीर दल का संभागीय शिविर जयपुर के सिरसी नाडिया में गुरुकुल ग्लोवल स्कूल में जिला संचालक श्री दीपक शास्त्री के निर्देशन में समपन्न हुआ जिसमें 50 बच्चों ने भाग लिया इसमें बच्चों को शारीरिक, आत्मिक, सामाजिक उन्नति के लिए योग्य शिक्षकों द्वारा शिक्षित किया गया, मुख्य शिक्षक अजमेर के श्री भागचन्द आर्य प्रान्तीय व्यायाम शिक्षक आर्य वीर दल राजस्थान रहे।

2. भरतपुर (गंगापुर सिटी)

दिनांक 13 से 20 मई 2018 तक आर्य वीर दल राजस्थान का संभागीय शिविर गंगापुर सिटी के अग्रसेन रिर्सोट में समपन्न हुआ जिसमें 55 आर्य वीरो ने भाग लिया शिविर में शारीरिक, आत्मिक, सामाजिक उन्नति के लिए आचार्य सोमदेव अजमेर एवं आचार्य यशवीर दिल्ली नें विशेष बौद्विक प्रदान किया। शिविर में जीवन लाल उदयपुर, दिनेश चितौड़गढ़, एवं स्थानीय शिक्षकों द्वारा शिक्षित किया। इस शिविर में मदनमोहन आर्य, जिला संचालक नरेन्द्र आर्य, नगर संचालक अभिषेक बंसल एवं आर्यवीर दल तथा आर्य समाज के स्थानीय सदस्यों ने प्रबन्धन किया, आर्य वीर दल राजस्थान के कार्यकारी संचालक श्री देवेन्द्र शास्त्री, जयपुर जिला संचालक श्री दीपक शास्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के आय व्यय निरीक्षक श्री सुखलाल आर्य ने शिविर का पर्यवेक्षण किया।

इन्द्रियाणां विचरतां, विषयेष्वपहारिषु । संयमे यत्नमातिष्ठेद्, विद्वान् यन्तेव वाजिनम् ।। – मनु. 2.88 ।।

अर्थात् विद्वान् मनुष्य, अपनी ओर आकर्षित करने वाले विषयों में विचरने वाली इन्द्रियों को नियन्त्रित करने में उसी प्रकार प्रयत्न करें, जैसे सारथी घोड़ों के नियन्त्रण में यत्न करता है।

आर्य समाज तिजारा अलवर का महासम्मेलन सम्पन्न

आर्य समाज तिजारा अलवर का महासम्मेलन दिनांक 4 से 6 मई 2018 तक बड़े धूमधाम एवं उत्साह से सम्पन्न हुआ जिसमें यज्ञ के ब्रह्मा जगदीश प्रसाद आर्य जखराना उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान थे जिन्होने वेद के मंत्रो का भावार्थ प्रस्तुत करते हुये अनेक दृष्टान्त के माध्यम से उपस्थित जन समुदाय को अभिभूत किया

देव पूजा, संगतिकरण एवं दान के साथ साथ पंच महायज्ञों का महत्त्व समझाया जिसे यज्ञ में शामिल यज्ञमानों ने अपने जीवन में आत्मसात करने का संकल्प लिया भजनोपदेशक श्री रामनिवास आर्य पानीपत हरयाणा, धर्मपाल यादव ईशरोदा एवं उषा आर्य भजनोपदेशिका के सुमधुर भजनो द्वारा संगीत की धारा वही तथा गुरुकुल भादस मेवात कें ब्रह्मचारियों का शक्ति प्रदर्शन, चरित्र निर्माण व युवा सम्मेलन, समाज सुधार सम्मेलन तथा बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ सम्मेलन आदि कार्यक्रम हुए इस कार्यक्रम में प्रदीप आर्य, प्रधान आर्य समाज स्वामी दयानन्द मार्ग अमरमुनि पूर्व मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान सम्मिलित थे। प्रधान रतनसिंह आर्य, मंत्री मास्टर ताराचन्द आर्य एवं प्रचार मंत्री एवं जिला संगठन मंत्री रामनिवास आदि ने भोजन तथा आवास की सुन्दर व्यवस्था की।

आर्य वीर दल राजस्थान के सम्भागीय आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर प्रारम्भ

1.जोधपुर

संभागीय शिविर जोधपुर के महर्षि दयानन्द के स्मृति भवन में दिनांक 20 मई को प्रारम्भ हुआ शिविर संचालन श्री किशन लाल गहलोत के कुशल प्रबन्धन में दिनांक 27 मई को सम्पन्न होगा

2.अजमेर

संभागीय शिविर ऋषि उद्यान अजमेर में दिनांक 23 मई को प्रारम्भ हुआ शिविर संचालन जिला संचालक श्री विश्वास पारीक के कुशल प्रबन्धन एवं परोपकारिणी सभा मंत्री श्री ओममुनि के निर्देशन में दिनांक 30 मई को सम्पन्न होगा

चुनाव सम्पन्न

दिनांक 15/04/2018 दिन रविवार को चुनाव अध्यक्ष श्री अंकुश आर्य, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, जयपुर की अध्यक्षता में पूर्व निर्धारित कार्यक्रमानुसार साधारण सभा का आयोजन किया गया जिसमें चुनाव के पूर्व श्री गौतम सिंह, मंत्री ने पिछले वित्तीय वर्ष का आय व्यय का विवरण प्रस्तुत किया। तदोपरान्त श्री राधाचरण जी शर्मा ने वर्तमान कार्यकारिणी को भंग करने की घोषणा की एवं सर्वसम्मति से आर्य समाज पवनपुरी (पटेल नगर) बीकानेर के वार्षिक चुनाव सम्पन्न हुए, जिसमें निम्न पदाधिकारी निर्वाचित घोषित किये गये–

प्रधान श्री राधाचरण शर्मा
मंत्री श्री गौतम सिंह
कोषाध्यक्ष श्री जगन पूनियॉ

सार्वदेशिक आर्यवीर दल का राष्ट्रीय प्रशिक्षण शिविर

दिनांक 4 से 17 जून 2018, स्थान गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, फरीदाबाद के शिविर में शाखानायक, उपव्यायाम शिक्षक एवं व्यायाम शिक्षक का प्रशिक्षण दिया जायेगा,

प्रवेश शुल्क 500/रुपये

महामंत्री श्री सत्यवीर आर्य दिल्ली – 9414789461

वैदिक सिद्धान्त प्रशिक्षण शिविर

आयोजक आर्य वीर दल राजस्थान

स्थान –
आर्ष महाविद्यालय आबु पर्वत सिरोही

दिनांक –
29 मई से 1 जून 2018

45 कुल शिवारार्थी अधिकतम भाग ले सकेंगे। पंजीकरण कराना अनिवार्य होगा।
युवा अथवा स्वयं को युवा समझने वाले अधिक उम्र के आर्य जन भाग ले सकेगे।

आबू के प्राकृतिक वातावरण एवं स्वास्थ्य लाभ का स्वर्णिम अवसर

सम्पर्क

आचार्य ओम प्रकाश
गुरूकुल आबु पर्वत
9414589510

गगेन्द्र आर्य स्नातक
गुरूकुल आबु पर्वत
74250 70732

देवेन्द्र शास्त्री कार्यकारी संचालक
आर्य वीर दल राजस्थान
मों 9352547258, 9785462640

निमंत्रणपत्रम्

आर्य कन्या गुरुकुल शिवगंज सिरोही का

विंशतितम भव्य वार्षिकोत्सव एवं तृतीय समावर्त्तन दीक्षा समारोह

ज्येष्ठ कृ. नवमी, दशमी, एकादशी, वि.सं. 2075
शुक्र, शनि, रवि, 8, 9, 10 जून 2018

सम्पर्क – 02976–270629, 9680674789

- परमात्मा की बनायी हुई इस सृष्टि में अभिमानी, अन्यायकारी, अविद्वान लोगों का राज्य बहुत दिन तक नहीं चलता ।
  – सत्यार्थ प्रकाश, एकादश समुल्लास

डाक पंजियन सं. RJ / JPC / 232 / 2017-2019 / आर. एन. आई नं.10471/60

कार्यालय सूचना एवं निर्देश

- समस्त आर्य समाज अपने भवन पर ओ३म् ध्वाज अनिवार्य रूप से फहरायें एवं मुख्य प्रवेश द्वार एवं भवनों के द्वार पर ''आर्य समाज/आर्य समाज मन्दिर'' इस प्रकार अवश्य अंकित करवायें। यथा समय आर्य समाज भवन, मुख्य द्वार, परिसर की बाउण्ड्री वॉल की मरम्मत, कलर पेन्ट आदि करवायें। आर्य समाज की सम्पत्तियों की सुरक्षा का उत्तरदायित्व सम्बन्धित आर्य समाज के पदाधिकारियों का है। आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा कभी भी आर्य समाज का निरीक्षण किया जा सकता है। कृपया अवगत रहें।
- आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान का मुखपत्र ''आर्य मार्तण्ड'' का प्रत्येक अंक नवम्बर–द्वितीय अंक से पीडीएफ फॉरमेट में भी उपलब्ध करवाया जा रहा है। इस फॉर्मेट में प्राप्त करने के लिए अपना ईमेल पता, नाम एवं सम्पर्क सूत्र aryamartand@gmail.com पर भेजें। वाट्स एप्प पर ''सत्यार्थ प्रकाश क्रान्ति, आर्य वीर राज. सूचना, आर्य वीर दल के अन्य सभी ग्रुप्स में नियमित रूप से उपलब्ध करवाया जा रहा है ।
- आर्य समाजों में होने वाली समस्त गतिविधियाँ ऋषि दयानन्द सरस्वती के मन्तव्यों एवं वैदिक सिद्धान्तों के अनुसार ही संचालित की जावें। उक्त प्रयोजनार्थ ही आर्य समाज संस्थाएँ अपने परिसर एवं भवन अन्य सम्बन्धित संस्थाओं को नियमानुसार उपलब्ध करवा सकती हैं। महर्षि दयानंद के सिद्धान्तों के प्रतिकूल उद्देश्यों वाली संस्थाओं एवं संगठनों आदि के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा एतदर्थ स्वीकृति नहीं है। साथ ही समस्त आर्य समाजों के पदाधिकारियों को यह भी निर्देशित किया जाता है कि वे आर्य समाज के भवन अथवा परिसर को व्यवसाय की दृष्टि से किराये पर देने से पूर्व सभा से लिखित में स्वीकृति अनिवार्यतः प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में यह भी संसूचनीय है कि आर्य समाज के पदाधिकारियों को समाज के भवन, दुकान, जमीन अथवा किसी भी प्रकार की परिसम्पत्तियों को विक्रय करने का अधिकार नहीं है।

आतिथ्य –आहुति

आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान द्वारा जयपुर में कार्यालय परिसर में निरन्तर आने वाले अतिथियों के लिए अस्थायी आवास एवं भोजन हेतु संचालित आतिथ्य–यज्ञ में अपनी बहुमूल्य आहुति देकर इस पवित्र यज्ञ को सुचारू रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे सभी आहुतिदाताओं का बहुत–बहुत आभार ।

अन्य जो भी इस व्यवस्था के सफल संचालन में अपनी आहुति भेंट करने के इच्छुक हों वे 9352547258 पर सम्पर्क कर सकते हैं। जन्मदिवस, वैवाहिक वर्षगांठ, स्मृति, विवाह आदि अवसरों पर आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित इस अतिथि यज्ञ में अपनी आहुति अर्पित पुण्यभागी बनें।

आगामी कार्यक्रम

1. आर्ष गुरुकुल आबू पर्वत देलवाड़ा सिरोही का 28 वाँ भव्य त्रि दिवसीय वार्षिकोत्सव दिनांक 26–27–28 मई 2018 को बडे धूमधाम से आयोजित किया जा रहा है।
   सम्पर्कः आचार्य ओम प्रकाश आर्य मों 9414589510
   रजनीकान्त आर्य मों 9461046483
2. 28वाँ आर्य महासम्मेलन अटलांटा (अमेरिका) : 19 से 22 जुलाई 2018
2. इस वर्ष भारत की राजधानी नई दिल्ली में होगा अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन – 2018 दिल्ली 25–26–27–28 अक्तूबर, 2018

आर्य्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान राजा पार्क जयपुर के लिये राज प्रिन्टर्स एसोसियेट्स बेसमेंट, 45, परनामी मन्दिर जयपुर द्वारा मुद्रित।
मु. सम्पादक एवं प्रकाशक डॉ. सुधीर कुमार शर्मा, मंत्री–आर्य्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान।

टिकट

प्रेषकः–
सम्पादक, आर्य्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान
राजा पार्क, जयपुर–302004

यूको बैंक A/c No.:18830100010430 तिलक नगर, जयपुर
IFSC - UCBA 0001883

प्रेषित

विशेष – आर्य्य मार्तण्ड में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। उनमें सम्पादक की सहमति आवश्यक नहीं है।